

# Youngster



Where dream Chisels into reality

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | OCT 2015 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

## गलत जीवनशैली है तनाव का कारण- प्रो. अनु सिंह लाठर

आधुनिक युग की तेज-तरार जिंदगी में लोगों द्वारा अपनायी गई गलत जीवनशैली के कारण ही उनके जीवन में तनाव पैदा हो रहा है, ये कहना है गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय मामले विभाग की निदेशक प्रो. श्रीमती अनु सिंह लाठर का। रोहिणी स्थित टेकिनिया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में स्ट्रेस टू स्टेडीनेस विषय पर 23वां राष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 10 अक्टूबर को इंस्टीट्यूट के सभागार में आयोजित किया गया।

सम्मेलन का शुभारम्भ प्रो. श्रीमती अनु सिंह लाठर, निदेशक अंतर्राष्ट्रीय मामले, गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली,

राजेश त्रिपाठी उपाध्यक्ष व मुख्य कॉर्पोरेट एचआर गुजरात हैवी केमिकल्स लिमिटेड नौएडा व डॉ. अश्विनी कुमार सीईओ, संतुलन ग्रुप व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। सम्मेलन की प्रोसिडिंग का विमोचन किया गया।

इंस्टीट्यूट व टेकिनिया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि तनाव से बचने के लिए हमें अपनी महत्वाकांक्षाओं को संतुलित करना होगा। इंस्टीट्यूट के निदेशक डा. अजय कुमार राठौर ने कहा कि आज के इस भागदौड़ भरी जिंदगी में जहां लोगों को पैसा कमाने की धुन लगी है, ऐसे में सभी

कहीं ना कहीं स्ट्रेस या मानसिक तनाव का शिकार हैं।

राजेश त्रिपाठी उपाध्यक्ष व मुख्य कॉर्पोरेट एचआर गुजरात हैवी केमिकल्स लिमिटेड नौएडा ने कहा कि हमारी आज की सबसे बड़ी टेंशन यही है कि स्ट्रेस को कैसे दूर किया जाये। डॉ. अश्विनी कुमार सीईओ, संतुलन ग्रुप ने कहा कि आज का इंसान तनाव से जूझता हुआ निरीह प्राणी बनकर रह गया है। स्ट्रेस को दूर करने के उपाय ढूंढने में लगे हुए हैं। सम्मेलन के संयोजक डा. ए.पी. सिंह ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया और यह भी कहा कि यह सम्मेलन युवाओं के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

-बाल कृष्ण मिश्र



छायाचित्र : ललित मोहन, शुभ्रम गोस्वामी



वर्चस्व मीडिया फेस्ट, टेकिनिया इंस्टिट्यूट आफ एडवांस्ड स्टडीज का एक रचनात्मक पहल है। जिसमें संस्थान के डिपार्टमेंट ऑफ जर्नलिज्म के छात्र अपने ज्ञान, कौशल, और क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। जिस प्रकार पिछले 9 सालों से टेकिनिया ने सफल आयोजन के साथ कुछ अलग करने की प्रथा को कायम रखा था उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इस बार के वर्चस्व ने भी कुछ अलग अंदाज में कुछ नायाब और नई ऊँचाईयों को छूआ। इस बार वर्चस्व की थीम "मेक-इन-इन्डिया" प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की महत्वाकांक्षी अवधारणा जो एक सफल और सुदृढ़ भारत के लिए आवश्यक है को ध्यान में रखकर निर्धारित की गयी थी। कार्यक्रम की शुरुवात टेकिनिया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के चेयरमैन श्री राम कैलाश गुप्ता व रेडियो सिटी नाईटी वन एफएम की आरजे दिव्या ने दीप प्रज्वलन कर के किया। अपने संबोधन में श्री गुप्ता ने छात्रों को शुभकामनाएं दी व उनका उत्साहवर्धन किया। मुख्य अतिथी के रूप में अंग्रेजी दैनिक पायनियर के सिटी एडीटर श्री पी.के सिंह ने भी छात्रों को अपना अनुभव को साझा किया।

इस बार वर्चस्व 2015 में 16 प्रकार के ईवेंट हुए और उसमें दिल्ली एन.सी.आर के 50 से कॉलेजों के छात्र भाग लिया और अपनी

कला का प्रदर्शन किया। इस बार वर्चस्व 2015 का एक अपना अलग ही अंदाज था जहां सिंगर शिवाय व्यास ने अपना जलवा बिखेरते हुए अपनी मदमस्त आवाज और सुरीले गीतों से उपस्थित युवाओं को झुमने पर मजबूर कर दिया। वहीं भारी संख्या में दर्शकों के उपस्थिति ने कार्यक्रम के उत्साह को दोगुना कर दिया। वर्चस्व 2015 दिल्ली हाट में 27 अक्टूबर को सुबह 09 बजे से दर्शकों के आने का जो सिलसिला शुरू हुआ वो देर शाम तक चलता रहा। जिसमें ऐड-मैड में पहले स्थान पर मधुबाला इंस्टीट्यूट की छात्रा प्रज्ञा अरोड़ा कि टीम विजयी रही और दुसरे स्थान पर फेयरफील्ड इंस्टीट्यूट के छात्र अलंकार चौहान की टीम व तीसरे स्थान पर भी फेयरफील्ड के छात्र भानू और उनकी टीम विजयी रहे। ग्रैफिटी में पहले स्थान पर दिल्ली मेट्रोपोलिटन कॉलेज नौएडा की महिमा गर्ग और उनके साथियों ने पहले स्थान पर कब्जा किया तो दूसरे नम्बर पर टेकिनिया के इंदरप्रीत और उनके साथी रहे। फिल्म स्क्रीनिंग में एमीटी युनिवर्सिटी के मोहित और उनकी टीम विजयी रही और दुसरे स्थान पर टेकिनिया के भाविक और उनके साथी थे इसी प्रतियोगिता में तीसरे स्थान पर मधुबाला के छात्र भव्या पटेल और उनकी टीम विजयी रही। मीडिया क्वीज में सी.पे.जी कॉलेज के

वरुण और उनके साथी प्रथम, दूसरी श्रेणी में टेकिनिया के हर्ष और उनके साथी, व तीसरी श्रेणी में दिल्ली विश्वविद्यालय के लक्ष्मीबाई कॉलेज की रुचि और उनकी साथी रहीं। वहीं न्यूज राइटिंग की प्रतियोगिता में पहले स्थान पर माखनलाल यूनिवर्सिटी की वैशाली रहीं। दूसरे स्थान पर टेकिनिया के युदित जैन और तीसरे स्थान पर जामिया मिलिया के इमरान रहे। नुक्कड़ नाटक की प्रतियोगिता में टेकिनिया इंस्टीट्यूट का मृदंग ग्रुप अव्वल रहा तो रनर-अप की पोजिशन दिल्ली विश्वविद्यालय के लक्ष्मीबाई कॉलेज की टीम को मिली। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण फैशन परेड व मिस्टर व मिस वर्चस्व की प्रतियोगिता थी।

जहां फैशन परेड में भारती कॉलेज डीयू की टीम ने बाजी मारी तो टेकिनिया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज की टीम दूसरे स्थान पर रही। मिस्टर व मिस वर्चस्व की लड़ाई में अपनी-अपनी श्रेणी में टेकिनिया के वरुन किंदरा व जिम्स रोहिणी की छात्रा प्रिया ने जीती। कार्यक्रम के अंत में ईडीएम नाईट का भी आयोजन किया गया जिसमें अंतर्राष्ट्रीय डीजे कारनिवोर ने हॉलिवुड व बॉलिवुड के गानों की अद्भूत मिक्सिंग से युवाओं को मस्त करते हुए उनको झुमने व नाचने पर मजबूर कर दिया।

-बाल कृष्ण मिश्र



## कैसा हो संवैधानिक पदों पर आशीन लोगों का आचरण

भारत का लोकतंत्र सभी को अपने बात कहने का अधिकार देता है, परन्तु हर एक की अपनी मर्यादा रेखा भी है। जब उस मर्यादा रेखा का अतिक्रमण होता है, तब लेखकों की लेखनी भी कुछ प्रश्नों का उत्तर तलाशने लगती है। अभी कुछ दिन पूर्व भारत के उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने मुसलमानों के विकास के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए केंद्र सरकार से अपेक्षा की कि वह इस पर विशेष ध्यान दें। यह संदेश उन्होंने उस सरकार को दिया है जिसका मुखिया शसबका साथ-सबका विकास को अपनी कार्य संस्कृति का आदर्श मानता है, जिसकी आंखों में हर समय सवा सौ करोड़ भारतवासी बसते हैं। जो देश के नागरिकों को वोट के चश्मे से नहीं देखता। सबको प्यार देना, सबका प्यार लेना, सबका समान रूप से विकास करना और देश को आगे बढ़ाना, जिसके राजनैतिक जीवन का एकमात्र लक्ष्य है, उनकी सरकार को एक मजहब मात्र के विकास के लिए प्रेरित करना लोकतंत्र की मर्यादा का उल्लंघन है।

विचार करने की जरूरत है कि कश्मीर में आई बाढ़ के समय प्रधानमंत्री ने तुरंत सहायता भेजी, क्यों? वहां तो अधिकांश मुसलमान ही थे। उनकी सेवा के लिए उसी सेना के जवानों को क्यों मोर्चे पर लगाया, जिन पर वहां के कुछ नागरिक पत्थर फेंकते थे? इराक संकट के समय केरल की जिन नर्सों को भारत सरकार सुरक्षित वापस लायी वे कौन थीं? यमन में आईएसआईएम के आतंक से जिन 48 देशों के लोगों सुरक्षित वापस लाने काम मोदी सरकार ने किया वे कौन थे? नेपाल भूकम्प के समय जिन 50 देशों के लोगों को नेपाल से बिना वीजा देखे मानवता के नाम पर बाहर निकाला वे कौन थे? क्या इन सब कामों के लिए सरकार को ये ढिंढोरा पीटना चाहिए कि इतनी संख्या में मुसलमानों का कल्याण मैंने किया है। किसी की मदद करना और मदद के बदले नोट तलाशना मोदी की कार्य संस्कृति में नहीं है।

मैं एक बार अहमदाबाद गया, तब नरेन्द्र मोदी वहां के मुख्यमंत्री थे। मुझे वहां से टैक्सी द्वारा सरदार सरोवर बांध जाना था। संयोग से उस टैक्सी का चालक मुसलमान था। रास्ते में अधिक दूरी में स्वाभाविक चर्चा के दौरान उससे पूछा कि यहां तुम लोगों का

काम धंधा कैसा है, नरेन्द्र मोदी तो हिंदुओं को अधिक सुविधायें देते होंगे, मुसलमानों को कम। उस मुस्लिम चालक ने तपाक से उत्तर दिया कि हमारे गुजरात में हम लोग खुश हैं, बड़ा सुकून है, रोजगार और आमदनी भी अच्छी है। गुजरात को बदनाम तो नेता लोग करते हैं। उपराष्ट्रपति को चाहिए कि मजहबी चश्मा उतारें, आम जनता की आवाज को सुनें और समझें। तब बोलें। वैसे भी देश के संवैधानिक पदों पर विराजमान लोगों की बातचीत, व्यवहार और कार्य संस्कृति पद की गरिमा के अनुरूप होनी चाहिए। इस देश में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और मुख्य न्यायाधीश के एक-एक शब्द की कीमत होती है। इस कीमत को किसी गुट या मजहब के पास गिरवी रखने का अधिकार इनमें से किसी के पास नहीं है। ये पद किसी राजनैतिक प्रतिद्वन्द्विता अथवा चुनावी महासमर के आरोपों-प्रत्यारोपों से प्राप्त नहीं होते हैं। इन पदों की अपनी गरिमापूर्ण मर्यादा है। इन पदों पर बैठे यदि किसी व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में आये दिन राजनैतिक या मजहबी कीड़ा काटता रहता है, तो उन्हें अपनी पसंद के राजनैतिक दल या मजहबी संगठन में ही काम करने के लिए अपने को स्वतंत्र कर लेना चाहिए। प्रधानमंत्री का पद जिस राजनैतिक तरीके से मिलता है उसमें आरोप प्रत्यारोप चलते हैं, पक्ष-विपक्ष चलता है, परन्तु मर्यादा वहां भी है। कभी-कभी वहां भी मर्यादाहीनता की अवस्था आ जाती है। देश ने देखा है कि 17 दिसम्बर 2006 को तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कह दिया कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है। गरीब, कमजोर, बेसहारा, अपंग उन्हें दिखाई नहीं दिया।

देश के प्रथम कांग्रेसी प्रधानमंत्री, जवाहर लाल नेहरू ने 26 मई 1949 को संविधान सभा में कहा था कि पार्थक्य की बात से हमारे देश का जबर्दस्त अहित हुआ है। सरदार पटेल ने तो यहां तक कहा था जिन अल्पसंख्यकों ने जबर्दस्ती देश का विभाजन करवा दिया उन्हें आप अल्पसंख्यक कहते हो। फिर भी कांग्रेस के बलबूते उपराष्ट्रपति की कुर्सी पर विराजित होने वाले उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने 20 जनवरी 2009 को अल्पसंख्यक आयोगों के वार्षिक सम्मेलन में अल्पसंख्यकों के और अधिक

संरक्षण की वकालत की थी। इतना ही नहीं अनुसूचित जाति जनजाति अधिनियम 1989 की भांति अल्पसंख्यक अधिनियम बनाने तथा राज्य अल्पसंख्यक आयोगों को मानवाधिकार आयोग जैसे अधिकार देने की भी पैरवी की थी। तब शायद कांग्रेस को अंसारी के स्वर पसंद आये होंगे क्योंकि लोकसभा का चुनाव सिर पर था। अब जब बिहार का चुनाव सामने है तो फिर से अंसारी का मुस्लिम प्रेम छलक रहा है, मुसलमानों के विकास का एजेंडा देश को दिखाया जा रहा है जिससे बिहार में रश्मि रथी का घोड़ा रोका जा सके। संवैधानिक पदों पर बैठे लोग मर्यादा की सीमा रेखा इस प्रकार तोड़ेंगे ऐसा तो उन्होंने भी नहीं सोचा होगा जिन्होंने इन संवैधानिक पदों का सृजन किया होगा।

मजहबी चिंता से ग्रस्त ऐसे लोगों को नहीं दिखायी देता होगा कि कश्मीर में सेना और देश के विभिन्न स्थानों पर सुरक्षा बलों पर आये दिन पत्थर फेंके जाने की घटना को कौन लोग अंजाम देते हैं। आतंकवाद में सम्मिलित अधिकांश लोग किस मजहब से संबंधित हैं, इसका कारण उनके कौन से संस्कार हैं? उनको यह भी नहीं दिखाई देता होगा कि देश के सभी मदरसों में स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस पर न तो राष्ट्रध्वज फहराया जाता और न ही राष्ट्रगीत या राष्ट्रगान गाया जाता है, जिस पर किसी न्यायमूर्ति को टिप्पणी करनी पड़ती है। ऐसे लोगों को यह भी नहीं दिखाई पड़ता कि क्रूर आक्रांता, अपने पिता को राजसत्ता के लिए जेल में बंद करने वाला, सत्ता के लिए अपने भाई बहनों का रक्त बहाने वाला, अपने पिता शाहजहां के महल में जलापूर्ति रोक कर छोटे-छोटे बच्चों को प्यासा ही तड़पा-तड़पाकर मार डालने वाले, हजारों मंदिरों को तोड़ने वाला तथा जुल्म की इंतहा करने वाला औरंगजेब इस देश में आदरणीय क्यों है? उसके नाम पर दिल्ली में बनी सड़क जब भारत माता के सच्चे सपूत, देश के गौरव मिसाइल मैन डा. एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर श्रद्धाभाव से दिल्ली महानगर पालिका परिवर्तित कर देती है तो किनके पेटों में दर्द शुरू हो जाता है। क्या इनको विकास की जरूरत है या मानसिक विकास की जरूरत है, इसका भी विचार होना चाहिए।

प्रस्तुति- कल्याण ढोंदियाल, बीजेएम, प्रथम वर्ष

## कौशल विकास से खुलेगा नए रोजगार सृजन का रास्ता

भारत में एक करोड़ 25 लाख नए युवा हर साल रोजगार की तलाश में घर से निकलते हैं। यह संख्या हर साल बढ़ रही है। भारत युवा देश है, और युवा देश होने का एक पहलू यह भी है कि यहां युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना एक चिंता का विषय है। एक पहलू और भी है। मान लीजिए किसी किसान के या कारीगर के चार बेटे हैं और कोई दूसरा रोजगार न मिल पाने पर वे भी अपने पिता के ही काम में शामिल हो जाते हैं। जो काम एक व्यक्ति करता था, वहीं काम पांच करने लगते हैं। यानी उनमें से कम से कम चार के पास वास्तव में कोई काम नहीं होता है, वे बेरोजगार होते हैं, लेकिन रोजगारशुदा नजर आते हैं। सिर्फ मजदूरों के बच्चे नहीं, दुकानों पर, कंपनियों में और अन्य जगहों पर भी, ऐसे लोग रोजगार में लगे नजर आते हैं, जिनके काम से उत्पादकता पर कोई खास असर नहीं पड़ता। यह प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या है, जो 1 करोड़ 25 हजार लाख के आंकड़े को और गंभीर बना देती है। कैसे मिलेगा इन्हें रोजगार? जवाब सिर्फ रोजगार के नए और उत्पादक अवसरों में है। और रोजगार अवसर मुहैया कराने की हमारी क्षमता कैसी है? (तत्कालीन) योजना आयोग के आंकड़ों के अनुसार, 2004-05 से 2009-10 तक, पांच वर्षों में भारत में रोजगार के मात्र 27 लाख नए अवसर पैदा हुए हैं, जबकि आवश्यकता लगभग 6 करोड़ अवसरों की थी। इतना ही नहीं, 2009-10 में 1 करोड़ 57 लाख लोग कृषि क्षेत्र से बेरोजगार हुए, और लगभग 72 लाख लोग विनिर्माण क्षेत्र से। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि हमें रोजगार के नए अवसरों का सृजन कर सकने की अपनी क्षमता तेजी से बढ़ानी होगी।

कई युवा शिक्षित भी हैं लेकिन उन्होंने जो कुछ पढ़ा-लिखा-सीखा है, उसमें से रोजगार दिलाने लायक कम ही है। और जो रोजगार में हैं, उन्हें अपनी औपचारिक शिक्षा से कोई लाभ बहुत कम होता है। वास्तव में रोजगारशुदा लोगों में से सिर्फ 2.3 प्रतिशत ऐसे हैं, जिन्हें अपने काम की दक्षता किसी शैक्षणिक कार्यक्रम से औपचारिक तौर पर मिली हो। बाकी सब चलते काम में हाथ बंटाने की स्थिति में हैं। इसके विपरीत, दुनिया के विकसित देशों में 75 प्रतिशत से लेकर 96 प्रतिशत तक लोग अपने कार्य के बारे में औपचारिक तौर पर दक्ष हैं। फिर हम दुनिया के सबसे युवा देश भी हैं।

आज की स्थिति में भारत की जनसंख्या में पाया जाने वाला सबसे बड़ा आयु वर्ग 27 वर्ष की औसत उम्र के लोगों का है, जो चीनियों से औसत उम्र में 10 साल कम है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार भारत में लगभग 36 करोड़ लोग 10 से 24 वर्ष की बीच की आयु के हैं, जो अमेरिका की कुल जनसंख्या से भी ज्यादा है। 2020 तक भारत की जनसंख्या की औसत आयु 29 वर्ष होगी, जबकि औद्योगिक देशों में यही आयु 40 से 50 वर्ष के बीच होगी।

ऐसा नहीं है कि बाजार में नौकरियां नहीं हैं। लेकिन आवश्यकता से कम हैं, प्रायः असंगठित क्षेत्र में हैं, उनमें आमदनी भी मामूली है और उत्पादकता भी मामूली है। कोई होनी-अनहोनी हो जाए, तो वह नौकरी कोई दिलासा देने की स्थिति में भी नहीं होती।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने युवा देश के इस पक्ष का कई बार जिक्र किया है। यहां प्रश्न सिर्फ युवाओं को किसी कार्य की दक्षता देने का नहीं है, बल्कि उन्हें ऐसा रोजगार दिलाने का है, जो वास्तव में आय का सृजन करता हो। रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए एक ओर तो नए-नए उद्योग-धंधे चाहिए, और दूसरी ओर उनमें काम करने के इच्छुक युवाओं में काम कर सकने की दक्षता चाहिए। तीसरे और थोड़े बारीक स्तर पर, ऐसे लोग भी चाहिए, जो उद्योग शुरू करने में उत्सुक हों, उसकी क्षमता रखते हों। फिर रोजगार को कम से कम इस लायक तो होना ही चाहिए कि वह किसी अनपेक्षित स्थिति में अपने श्रमिकों की, उनके परिवार की कुछ चिंता कर सकता हो।

लिहाजा, इस समस्या से एक साथ कई स्तरों पर निपटा जा रहा है। आशा है कि मेक इन इंडिया का विश्व व्यापी अभियान भारत में नए उद्योग-धंधों की आवश्यकता को एक हद तक पूरा करने में सफल रहेगा। दूसरे स्तर पर इंडिया अभियान भारत के युवाओं को या इनकी मदद से शुरू होने वाले अन्य उद्योगों में रोजगार दिलाने में सफल रहेगा। स्मार्ट सिटीज का अभियान विशेषकर इन नए उद्योगों और उनमें काम करने वालों की रिहाइश और उनके शहरीकरण की आवश्यकताएं पूरी करेगा। किसी होनी-अनहोनी की स्थिति से निपटने में प्रधानमंत्री की विविध बीमा योजनाएं मददगार रहेंगी। जैसे-जैसे मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया और स्मार्ट सिटी के अभियान गति पकड़ते जाएंगे, प्रधानमंत्री की बीमा और सामाजिक सुरक्षा की अन्य योजनाओं में कुछ ऐसे नए पहलू जुड़ते जाएंगे, जो कई उद्देश्यों को एक साथ पूरा कर रहे होंगे। इस तरह की कई परियोजनाएं एक साथ काम करेंगी, तब युवाओं के रोजगार और उनकी खुशहाली का लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा। प्रधानमंत्री ने इससे भी बड़ा लक्ष्य देश के सामने रखा है। उन्होंने देश का आह्वान किया है कि वह भारत को कौशल का वैश्विक केन्द्र बनाने का संकल्प ले। वह भारत को कौशल का वैश्विक केंद्र बनाने का संकल्प ले। वह भारत को मैन्युफैक्चरिंग यानी विनिर्माण का वैश्विक केन्द्र बनाने का इरादा पहले ही जता चुके हैं। जाहिर है, एक के बिना दूसरे की गति नहीं है। सरकार का लक्ष्य 2022 तक 15 करोड़ भारतीय युवाओं को काम का हुनर,



कुशलता, दक्षता या स्किल सिखाना है। लेकिन अगर सभी नौकरी मांगेंगे, तो नौकरी देगा कौन? आप सिर्फ विदेशी नियोक्ताओं पर निर्भर नहीं रह सकते। निश्चित रूप से कुछ लोगों को तो आगे आना ही होगा कि हम बायो-डाटा देंगे नहीं, बल्कि लेंगे यानी उनको उद्यमी बनना पड़ेगा। यहां उद्यमिता के विकास का पक्ष सामने आता है। सरकार ने इन दोनों प्रश्नों का उत्तर एक साथ देने के लिए कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय स्थापित किया है। इस स्किल इंडिया अभियान 70 से अधिक योजनाएं बनाकर काम कर रहे हैं। गौर करें तो सारी गतिविधियां एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और एक दूसरे की पूरक है। गंगा की सफाई और राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन, और यहां तक कि कृषि संबंधी योजनाएं भी अंततः इसी बेहतर

और संपन्न—समर्थ भारत के निर्माण की दिशा में जाती हैं। ऐसे में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्किल इंडिया अभियान की शुरुआत वाले दिन ही नीति आयोग की संचालन परिषद की बैठक बुलाई जिसमें मुख्यमंत्रियों के साथ भूमि अधिग्रहण विधेयक पर भी चर्चा की गई। चुनौती मात्र इतनी नहीं है। कौशल विकास का कार्य बहुआयामी है। इसमें केंद्र और राज्य—दोनों सरकारों की भूमिका होती है। उनके विभिन्न विभागों की भूमिका होती है। सिर्फ सरकार ही नहीं, कई उभरते क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें कौशल का प्रशिक्षण देने वाले लोग निजी क्षेत्र से बुलाने होते हैं। नियोक्ताओं को भी इस अभियान से जोड़ना होता है। एक स्थिति ऐसी भी आती है, जब नई तकनीक के लिहाज से कर्मियों को

प्रशिक्षित करने के साथ ही, नियोक्ताओं को भी प्रशिक्षित करना होता है। सारे कार्यक्रम भी प्रभावशीलता को लेकर भी अतिरिक्त सतर्कता बरतनी आवश्यक होती है। रोजगार का बाजार अंततः सेवाओं और वस्तुओं के देसी-विदेशी बाजार पर निर्भर होता है, लिहाजा वित्तीय और अन्य नीतियां भी इससे जुड़ती हैं। शिक्षण संस्थानों से लेकर प्रशिक्षकों तक और नियोक्ताओं से लेकर उद्योगों तक की भागीदारी और सहयोग एक साथ निश्चित किया जाना अनिवार्य होता है। कोई संदेह नहीं कि हम एक अनूठे रास्ते पर बढ़ चले हैं। लेकिन वास्तविक कौशल अड़चनों को दूर करके आगे निकलने में ही है। भारत को अपना यह कौशल विकसित करना है, सिद्ध करके दिखाना है।

प्रस्तुति-

शिखर श्रीवास्तव, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

## गोवा पर्यटकों को समुद्री जहाज और हेलिकाप्टर उपलब्ध करायेगा

गोवा को नये वर्ष में राज्य में 75 लाख पर्यटकों के आने की उम्मीद है। ऐसे में राज्य सरकार और ज्यादा पर्यटकों को लुभाने के लिये समुद्री जहाज, हेलिकाप्टर और जमीन तथा पानी दोनों में चलने वाले वाहन जैसी सुविधायें भी उपलब्ध करायेगी। गोवा के पर्यटन मंत्री दिलीप पारलेकर ने कहा, "समुद्री जहाज परियोजना 6 जनवरी को शुरू होगी। हमने मुंबई स्थित मेहेयर कंपनी के साथ पहले ही अनुबंध पर हस्ताक्षर कर लिया है जो कि दाबोलिम एयरपोर्ट से राज्य की विभिन्न नदियों के लिये समुद्री जहाज की सेवायें चलायेगी।" समुद्री जहाज और हेलिकाप्टर्स वास्को स्थित दाबोलिम हवाई अड्डे से जहां समूचे

राज्य में उड़ान भरेंगे वहीं पर्यटकों के लिये जमीन और पानी दोनों जगह चलने वाले वाहनों की शुरुआत करने की भी योजना है। इन वाहनों के जरिये पर्यटकों को आंतरिक जलमार्गों से शहर के विभिन्न हिस्सों तक पहुंचाया जायेगा। उन्होंने कहा कि पहले चरण में समुद्री जहाज पर्यटकों को लेकर हवाई अड्डे से सीधे शहर की मांडोवी और चपोरा नदियों के लिये उड़ान भरेंगे। इसके लिये परीक्षण उड़ान पिछले साल मई में सफलता पूर्वक की गई है। राज्य का पर्यटन विभाग 15 जनवरी से निजी हेलिकाप्टर सेवायें भी शुरू करेगा जिसमें डाबोलिम हवाई अड्डे को राज्य के विभिन्न हेलिपैड से जोड़ा जायेगा।



प्रस्तुति- प्रियंका सिंह, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

## कुछ सेकेंड में ही जलशोधन कर सकता है नया पॉलीमर

वैज्ञानिकों ने दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाला एक ऐसा नया पॉलीमर तैयार किया है, जो कि चंद सेकेंड में ही बहते जल में से प्रदूषकों को खत्म कर सकता है। यह ठीक वैसा ही है, जैसे घर में इस्तेमाल किए जाने वाले एयर फ्रेशनर हवा में दिखाई न पड़ने वाले प्रदूषकों को पकड़ता है और अवांछित गंध को मिटा देता है। शोधकर्ताओं ने जलशोधन उद्योग में क्रांति ला सकने वाली तकनीक के विकास के लिए साइक्लोडेक्सट्रिन नामक पदार्थ का इस्तेमाल किया है। यह वही पदार्थ है, जो कि एयर फ्रेशनर में इस्तेमाल किया जाता है। अमेरिका की कोर्नेल यूनिवर्सिटी के असोसिएट प्रोफेसर विल डिचेल के नेतृत्व वाले दल ने साइक्लोडेक्सट्रिन का संरंघ रूप तैयार किया। साइक्लोडेक्सट्रिन के इस रूप ने पारंपरिक तौर पर इस्तेमाल किए



जाने वाले सक्रिय कार्बन की तुलना में प्रदूषकों के अवशोषण की क्षमता कुछ मामलों में 200 गुना से भी ज्यादा दिखी। साइक्लोडेक्सट्रिन से बने पुराने पॉलिमरों की तुलना में सक्रिय कार्बनों का सतही क्षेत्रफल तो ज्यादा होता है लेकिन जितनी मजबूती से साइक्लोडेक्सट्रिन प्रदूषकों को

बांधकर रख पाता है, उतनी मजबूती सक्रिय कार्बन नहीं दिखा पाते।

डिचेल ने कहा, "सबसे पहले तो हमने साइक्लोडेक्सट्रिन से बने ज्यादा सतही क्षेत्रफल वाले पदार्थ का निर्माण किया। हमने कुछ लाभ सक्रिय कार्बन के शामिल किए और कुछ निहित लाया। साइक्लोडेक्सट्रिन के थे।" उन्होंने कहा, "ये पदार्थ बहते पानी से कुछ ही सेकेंड में प्रदूषकों को मिटा देंगे।" साइक्लोडेक्सट्रिन वाले पॉलीमर का पुनरुत्पादन आसानी से और सस्ते तरीके

से किया जा सकता है। इसका कई बार पुनरुत्पादन किया जा सकता है और इसके प्रदर्शन में कोई कमी भी नहीं आती। ये निष्कर्ष 'नेचर' नामक जर्नल में प्रकाशित हुए।

प्रस्तुति- गौरव जोशी, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

## पंचायत चुनावों में ई-वोटिंग लाने पर गुजरात सरकार कर रही विचार

हालिया निकाय चुनावों में उदासीन सी प्रतिक्रिया मिलने के बावजूद गुजरात सरकार ई-वोटिंग की सुविधा को अब पंचायत चुनावों तक विस्तारित करने की योजना बना रही है। फिलहाल ई-वोटिंग की सुविधा राज्य के सभी आठ नगर निगमों के मतदाताओं तक ही सीमित है। जिला, तालुका और ग्राम पंचायत के मतदाताओं को अभी तक यह सुविधा प्राप्त नहीं है। फसला लेने से पहले राज्य के पंचायत विभाग ने इस परियोजना की व्यवहारिकता के संदर्भ में भारत भर से और अन्य देशों से सूचना जुटाने का काम शुरू किया है।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री जयंती कवाडिया के अनुसार, विभाग राज्य के ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट की कनेक्टिविटी के बारे में जानकारी भी जुटा रहा है। कवाडिया ने कहा, "इस समय हमारा विभाग यह जानकारी जुटा रहा है कि क्या ऐसी कोई सुविधा भारत के किसी हिस्से में या विश्व में कहीं उपलब्ध है? यदि यह उपलब्ध है तो वहां इसका संचालन किस तरह से किया जाता है? गुजरात में ई-वोटिंग को लागू करने का खाका खींचने के लिए ऐसी

जानकारी हमारे लिए जरूरी है।" हाल ही में संपन्न हुए स्थानीय निकाय चुनावों में गुजरात राज्य निर्वाचन आयोग (एसईसी) छह नगर निगमों में मतदान के लिए ई-वोटिंग की सुविधा लेकर आया था। इसे उदासीन किस्म की ही प्रतिक्रिया मिली। इन छह शहरी निकायों के कुल 95.9 लाख मतदाताओं में से महज 806 लोगों ने ही ऑनलाइन वोट डालना पसंद किया। गुजरात एसईसी देश का ऐसा पहला राज्य निर्वाचन आयोग है, जिसने राज्य के नगर निगम क्षेत्रों के मतदाताओं को ऑनलाइन मतदान की सुविधा दी। मतदाताओं को यह सुविधा वर्ष 2010 में सबसे पहली बार दी गई थी। हाल में संपन्न हुए स्थानीय निकाय



चुनावों में इस सुविधा का इस्तेमाल दूसरी बार किया गया है। राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव एमवी जोशी ने कहा कि यदि पंचायत विभाग भविष्य में ई-वोटिंग को हरी झंडी दिखाता है तो उसके लिए निर्वाचन आयोग की तैयारी भी पूरी है।

प्रस्तुति- अनुप्रिया डोभ्राज, बीजेएमसी तृतीय वर्ष

# मधुमेह के मरीजों के लिए फायदेमंद है अखरोट

अखरोट को सारे नट्स में बेहद स्वादिष्ट और पौष्टिक माना जाता है। पर क्या आप जानते हैं कि यह मधुमेह के मरीजों के लिए बेहतरीन है। एक रिसर्च के मुताबिक अखरोट में पाया जाने वाला हेल्दी फैट मधुमेह के मरीजों को अपने खाने में जरूर शामिल करना चाहिए। यह फैट मधुमेह के मरीजों के लिए बेहद फायदेमंद है। अखरोट में पाया जाने वाला पालीसैचुरेटेड फैट टाइप टू मधुमेह के मरीजों में मेटाबोलिज्म को बढ़ाने में मदद करता है।



मौजूद शर्लूफा-फिनोलेनिक एसिकश धमनी (आर्टरी) को भी सही ढंग से चलने में मदद करता है और उसमें पट्टिका जमने से रोकता है। अखरोट में मौजूद एल-आर्जिनिक खून की नालिकाओं को आराम देता है जिससे रक्तचाप नियंत्रित रहता है। अखरोट में मौजूद प्रोटीन और फाइबर हमें मोटापे का शिकार होने से भी बचाता है। मगर ध्यान रहे इसके ज्यादा सेवन से बर्बे क्योंकि इसमें मौजूद उच्च मात्रा में ऑक्सेलेट पथरी का कारण भी बनते हैं।

प्रस्तुति- शिवांगनी पांडेय, बीजेएमसी प्रथम वर्ष

## This Month

**October 13, 1792** - The cornerstone of the White House was laid by George Washington. The building, located at 1600 Pennsylvania Avenue, is three stories tall with over 100 rooms, and was designed by James Hoban. In November of 1800, President John Adams and his family moved in. The building was first known as the "Presidential Palace," but acquired the name "White House" about 10 years after its completion. It was burned by British troops in 1814, then reconstructed, refurbished and reoccupied in 1817.

\*\*\*\*\*

**October 16, 1793** - Queen Marie Antoinette was beheaded during the Reign of Terror following the French Revolution. She was the wife of King Louis XVI and had become the symbol of the people's hatred for the old regime due to her extravagance and frivolity. According to legend, she responded, "Let them eat cake," when told poor people had no bread.

\*\*\*\*\*

**October 21, 1805** - The Battle of Trafalgar took place between the British Royal Navy and the combined French and Spanish fleets. The victorious British ended the threat of Napoleon's invasion of England. British naval hero Admiral Horatio Nelson was mortally wounded aboard his ship Victory.

\*\*\*\*\*

Compilation: Ms. Honey Shah

अध्ययन के दौरान 50 व्यस्कों पर यह प्रयोग किया गया, जो इंसुलिन नहीं लेते थे। उन्हें रोज स्वास्थ्यवर्धक खाने के साथ अखरोट खिलाया गया। कुछ दिन बाद उनकी सेहत में सुधार देखा गया। इनका वजन भी नियंत्रण में रहा। अक्सर शरीर का वजन बढ़ने से मधुमेह, उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियां बढ़ने लगती हैं। अखरोट का सेवन मधुमेह के मरीजों में इंसुलिन स्तर को भी नियंत्रित करने में मदद करता है। अखरोट के साथ-साथ आप साबुत अनाज को भी अपने खाने में शामिल करें। मधुमेह के मरीजों को मैदा और तली-भुनी चीजों का कम इस्तेमाल करना चाहिए। अखरोट के इस्तेमाल से 15 से 20 प्रतिशत टाइप टू डायबिटीज का खतरा कम होता है।

वजन बढ़ने से बीमारियों का खतरा भी बढ़ता है ऐसे में अखरोट वजन नियंत्रित करने का बेहतर विकल्प है। खाने के प्रति जागरूक होना बहुत जरूरी है। कम से कम दो फल और तीन कटोरी सब्जी प्रतिदिन खाना जरूरी है। मधुमेह के मरीजों में अक्सर उच्च रक्तचाप की शिकायत देखी गई है। ऐसे में अपने खाने में सोडियम और नमक की मात्रा कम कर हर्ब्स, मसाले और फल के रसों को शामिल करें। खाने में सैचुरेटेड फैट को कम करें और पालीसैचुरेटेड फैट जैसे अखरोट को शामिल करें। अखरोट आपके दिल को भी स्वस्थ रखने में मदद करता है। इसमें मौजूद अच्छा कोलेस्ट्रॉल दिल को मजबूत बनाता है।

डायबिटीज के मरीजों में वाहिका नली (वैसकुलर) की बीमारियां सबसे पहले होती हैं। ऐसे में अखरोट इन्हें सही तरह से काम करने में मदद करता है। साथ ही इसमें

## Basics of Media

**Digital Versatile Disc (DVD)** - The standard DVD is a read-only, high-capacity (4.7 gigabytes or more) storage device of digital audio and video information. Also called digital videodisc.

\*\*\*\*\*

**Equalization** - Controlling the quality of sound by emphasizing certain frequencies while de-emphasizing others.

\*\*\*\*\*

**Fi Gure/Ground** - Emphasizing the most important sound source over the general background sounds.

\*\*\*\*\*

**Flash Memory Device** - A small read/write portable storage device that can download, store, and upload very fast (in a flash) a fairly large amount (1 gigabyte or more) of digital information. Also called flash drive, stick flash, flash stick, or flash memory card.

\*\*\*\*\*

**Mini Disc (MD)** - Optical 2½-inch-wide disc that can store one hour of CD-quality audio.

\*\*\*\*\*

**Mixing** - Combining two or more sounds in specific proportions (volume variations) as determined by the event (show) context.

\*\*\*\*\*

Compilation: Rahul Mittal

## सेब को बहुत उपयोगी माना गया है आयुर्वेद में

सेब दुनिया भर में व्यापक रूप से उगाया जाने वाला फल है। रोसासी परिवार के इस सदस्य को वैज्ञानिक भाषा में मालुस पूमिला लिनिअस कहते हैं। इसके पेड़ की ऊंचाई लगभग 15 मीटर होती है। कच्ची अवस्था में सेब हरे तथा स्वाद में



खट्टे होते हैं पकने पर लाल-हरित आभा लिए मीठे और रसदार हो जाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार सेब पित्तनाशक, वातनाशक, शीतल, भारी, पुष्टिकारक हृदय के लिए फायदेमंद, वीर्यवर्धक तथा मसाने एवं गुदों को साफ करना वाला है। इससे अनेक आयुर्वेदिक दवाइयां बनती हैं। इसमें सर्वाधिक मात्रा में फास्फोरस होता है। इसके अतिरिक्त इसमें आयरन, प्रोटीन, कैल्शियम, शर्करा तथा बी समूह के विटामिन भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। कार्बोहाइड्रेट का एक रूप पेक्टिन भी इसमें खूब पाया जाता है। यह हृदय रोग में बहुत लाभकारी होता है।

पथरी रोगी के लिए सेब बहुत फायदेमंद होता है। रोगी को पूर्णतया पके हुए चार-पांच सेब प्रतिदिन खाने को देने चाहिए। भोजन में शाक-सब्जी व फल देने चाहिए। जिगर के रोगी के लिए तो सेब अमृत के समान है। उन्हें दिन में हर बार भोजन से पहले दो ताजा-मीठे सेब खाने चाहिए या सेब की चाय पीनी चाहिए।

मस्तिष्क की कमजोरी दूर करने के लिए सेब एक अचूक इलाज है। ऐसे रोगी को प्रतिदिन एक सेब खाने को दें। इसके अतिरिक्त रोगी को दोपहर तथा रात को भोजन में कच्चे सेबों की सब्जी दें। शाम को एक गिलास सेब का रस दें तथा रात को सोने से पूर्व एक

पका मीठा सेब खिलाएं। इससे एक महीने में ही रोगी की दशा में सुधार आने लगता है।

जिन लोगों की आंखें कमजोर हैं उन्हें एक ताजा सेब की पुल्टिस कुछ दिनों तक आंखों पर बांधनी चाहिए। यदि भोजन के साथ

प्रतिदिन ताजा मक्खन तथा मीठा सेब खाएं तो नेत्र ज्योति तो तेज होती ही है साथ ही दस्त व पेशाब खुलकर आता है तथा चेहरा सुर्ख हो जाता है।

बुखार में रोगी को प्यास, जलन, थकान तथा बेचौनी हो तो सेब की चाय या ताजा सेब का रस पिलाना चाहिए। इससे रोगी को तुरंत आराम मिलता है। गले में घाव, छाले हों या किसी भी चीज को निगलने में कष्ट होता हो तो अच्छे ताजे सेब का रस निकालें फिर चम्मच से धीरे-धीरे रस गले तक ले जाएं और कुछ समय के लिए गले में रोककर रखें। इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है।

पेट में गैस की शिकायत रहती हो तो एक मीठे सेब में लगभग 10 ग्राम लौंग चुभाकर रख दें। दस दिन बाद लौंग निकालकर तीन लौंग तथा एक मीठा सेब नियमित रूप से खाएं। इस दौरान चावल या उससे बनी चीजें रोगी को खाने को न दें।

पेट के कीड़ों के निदान के लिए रोगी को प्रतिदिन दो मीठे सेब दें या प्रतिदिन एक गिलास ताजा सेब का रस दें। इससे कीड़े मर जाते हैं और मल के रास्ते निकल जाते हैं। कब्ज दूर करने के लिए प्रतिदिन सुबह उठकर खाली पेट दो सेब चबा चबाकर खाएं। इससे अग्निमांघ दूर होता है और भूख भी बढ़ जाती है।

दिल कमजोर हो या दिल की धड़कन कम या ज्यादा हो तो चांदी का वर्क लगाकर सेब के मुरब्बे का सेवन करना चाहिए। इससे मोटापा भी दूर होता है। अनिद्रा के उपचार में भी सेब बहुत उपयोगी है। नींद न आती हो या एक-दो बजे नींद खुलने पर दुबारा नींद न आती हो तो रोगी को सोने से पहले एक मीठे सेब का मुरब्बा खिलाइये तथा ऊपर से गुनगुना दूध पीने को दें। इससे अच्छी नींद आएगी। सेब की जड़ की छाल, प्रशीतक तथा आंत्र-मिहर है। छाल का फांट बारी के पैत्रिक बुखारों में लाभकारी होता है।

प्रस्तुति- कृति नारंग, बीजेएमसी प्रथम वर्ष

### IMPORTANT QUOTES

"The artist is nothing without the gift, but the gift is nothing without work."

*Emile Zola*

\*\*\*\*\*

"The full use of your powers along lines of excellence."

*John F. Kennedy*

\*\*\*\*\*

"In theory, there is no difference between theory and practice. But in practice, there is."

*Yogi Berra*

\*\*\*\*\*

"Each problem that I solved became a rule which served afterwards to solve other problems."

*Rene Descarte*

\*\*\*\*\*

"In the End, we will remember not the words of our enemies, but the silence of our friends."

*Martin Luther King Jr.*

\*\*\*\*\*

"Whether you think that you can, or that you can't, you are usually right."

*Henry Ford*

\*\*\*\*\*

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

### Winners V/s Losers

Part-51

The Winner says, "It may be difficult but it is possible"; The Loser says, "It may be possible but it is too difficult."

\*\*\*\*\*

When a Winner makes a mistake, he says, "I was wrong"; When a Loser makes a mistake, he says, "It wasn't my fault."

\*\*\*\*\*

A Winner makes commitments; A Loser makes promises.

\*\*\*\*\*

Winners have dreams; Loser have schemes.

\*\*\*\*\*

Winners see the gain; Losers see the pain.

\*\*\*\*\*

to be continued  
in next issue

Compilation:  
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at [youngster@tecnia.in](mailto:youngster@tecnia.in)

Vol. 11 No. 10

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnica Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; Printer: Ramesh Chander Dogra; Printed at: Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5

Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.